6

''यीशु पर ध्यान करो''

(3:1-14)

इब्रानियों 3:1 का आरम्भ पिछली आयतों की बात करते हुए ''इसलिए'' शब्द के साथ होता है।[1] ''इसलिए [पहले कही गई बात के आधार पर], ... यीशु पर ... ध्यान करो'' (आयत 1)। उन्हें समझ हो या न पर पत्री के मूल प्राप्तकर्त्ता यीशु की निन्दा कर रहे थे। यदि वे व्यवस्था की ओर लौट जाते, यदि वे मूसा की ओर लौट जाते, यदि वे विश्वास से गिर जाते, ऐसा कोई भी काम यीशु के लिए आदर की कमी को ही दर्शाता है।

इसलिए, लेखक ने कहा कि उन्हें यह काम अर्थात ''यीशु पर ध्यान'' करना आवश्यक है। अनुवादित शब्द ''ध्यान करो'' का अर्थ ''साथ देखना, ... पूरी तरह से समझना, ध्यान से देखना''[2] या उत्सुकता से। ऐसा करने से उन्हें उसके वफ़ादार बने रहने में प्रेरणा मिलनी थी। यीशु पर ध्यान करने से हमें भी उसके वफ़ादार रहने में सहायता मिलेगी।

यीशु पर ध्यान करो, जो विश्वासयोग्य है (3:1-6क)

हमारे वचन पाठ और इब्रानियों की पूरी पुस्तक में मुख्य विचार प्रभु की *विश्वासयोग्यता* है (देखें आयतें 2, 6)। यीशु की विश्वासयोग्यता के कई उदाहरण हमारे वचन पाठ में मिलते हैं।

हमें भाई कहने में विश्वासयोग्य (3:1क)

पिछले अध्याय में हमने देखा था कि यीशु ''उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता'' (2:11; देखें आयत 17)। इस अध्याय का आरम्भ इसलिए ''हे पवित्र भाइयो'' से होता है (3:1क)। यीशु के भाई होने के नाते,[3] हम जंगल में इस्राएलियों की सांसारिक बुलाहट के विपरीत ''स्वर्गीय बुलाहट में भागी हैं'' (आयत 1ख)।

प्रेरित और याजक के रूप में विश्वासयोग्य (3:1ग, 2क)

यीशु को ''प्रेरित और महायाजक जिसे हम अंगीकार करते हैं'' कहा गया है। ''प्रेरित'' शब्द का अर्थ है ''भेजा हुआ।'' यीशु को परमेश्वर के द्वारा (देखें मत्ती 10:40; मरकुस 9:37; यूहन्ना 5:36) मनुष्य के पास भेजा गया था; यीशु के काम का एक भाग *परमेश्वर की ओर से मुनष्य के पास* जाना था। परन्तु वह हमारा महायाजक भी बना। व्यवस्था के अधीन, महा याजक लोगों के लिए विनती करता था, ताकि वे परमेश्वर तक पहुंच सकें। इसलिए एक अर्थ में यीशु के काम का एक और भाग *मनुष्य की ओर से परमेश्वर के पास* जाना था (देखें 1 तीमुथियुस 2:5)। जी. सी. ब्लीवर ने इन दो भूमिकाओं को इस प्रकार व्यक्त किया: ''भविष्यवक्ता उसे कहते हैं जो परमेश्वर के लिए लोगों से बात करता है। ... याजक वह होता है जो लोगों के लिए

परमेश्वर से बात करता है।''[4]

प्रेरित और महा याजक के रूप में अपनी दोनों भूमिकाओं में यीशु ''अपने नियुक्त करने वाले के लिए *विश्वासयोग्य* था'' (आयत 2क)। वह परमेश्वर द्वारा उसे जो काम दिया गया था, उसे पूरा करने में विश्वासयोग्य था (देखें यूहन्ना 4:34; 5:30; 6:38)।

परमेश्वर के घर के बनाने वाले और मालिक के रूप में विश्वासयोग्य (3:2ख-6क)

पृथ्वी पर यीशु के उद्देश्य को कई प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है (देखें लूका 4:43; 19:10)। हमारे वचन पाठ में ज़ोर उसके परमेश्वर का घर बनाने और उसकी सम्भाल के मिशन पर (आयतें 3, 4, 6) है।

लेखक ने यीशु के विश्वास योग्य होने की इस बात का इस्तेमाल यह तय करने के लिए किया कि वह ''सबसे बड़े से बड़ा'' है अर्थात वह *मूसा* से भी बड़ा है। यहूदी सोच के अनुसार मूसा से बड़ा कोई नहीं है। यहूदी लोग मूसा को स्वर्गदूतों से भी बड़ा मानते थे। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने अपने तर्क में अगला तर्कसंगत कदम उठाया: उसने यीशु को तो स्वर्गदूतों से बड़ा पहले ही साबित कर दिया था, अब वह यह साबित करने लगा कि यीशु उससे भी बड़ा है जिसे यहूदी लोग स्वर्गदूतों से बड़ा मानते थे।[5]

लेखक ने यीशु और मूसा में दो भिन्नताएं बताईं:

- यीशु बनाने वाला है, जबकि मूसा उस रचना का एक भाग है (आयतें 3, 4)।
- यीशु पुत्र है जबकि मूसा सेवक था (आयतें 5, 6)।

हमें अपने लोग मानने में विश्वासी होना (3:6क)

आयत 6 कहती है कि ''मसीह पुत्र की नाईं उसके घर का अधिकारी है, और *उसका घर हम हैं*'' (आयत 6क)। मत्ती 16 अध्याय में यीशु ने कहा था कि वह अपनी कलीसिया बनाएगा (आयत 18) और 1 तीमुथियुस 3:15 यह घोषणा करता है कि कलीसिया परमेश्वर का घराना है। आज परमेश्वर के घराने के लोग यहूदी नहीं बल्कि मसीही लोग हैं। हम उसके हैं। हम उसका निवास स्थान हैं (इफिसियों 2:21, 22)। कितनी बड़ी आशीष है! कितना बड़ा सम्मान है!

यीशु पर ध्यान करो, और विश्वासयोग्य बनो (3:6ख-14)

लेखक हमेशा व्यावहारिक रहा। उसने यीशु के विश्वासयोग्य होने की चर्चा के बाद अपने पाठकों से विश्वासयोग्य बने रहने की शिक्षा दी।

परमेश्वर का घराना (लोग) होना ही काफ़ी नहीं था

आयत 6 में और फिर आयत 14 में ''यदि'' शब्द पर ध्यान दें। इस्राएली परमेश्वर के लोग थे, पर वे ''दृढ़ता से स्थिर'' *नहीं* रहे। आयतें 7 से 11 इस्राएलियों की बेवफ़ाई की बात करते हुए भजन संहिता 95 से ली गई हैं। अफ़सोस कि बड़े अगुओं के सफल होने की गारन्टी नहीं

है। मूसा एक महान अगुआ था; आज यीशु उससे भी महान है। परन्तु उनके *अनुयायी* भी बहुत होने आवश्यक हैं।

हम ''दृढ़ता से स्थिर'' कैसे रहें

हमारे वचन पाठ में कई सुझाव हैं जो हमें विश्वासयोग्य बने रहने में सहायता कर सकते हैं।

(1) *समझ लें कि हम गिर सकते हैं।* ''यदि'' शब्द (आयतें 6, 14) सशर्त है। यदि इस्राएली लोग गिर गए, तो हम भी गिर सकते हैं। हमें यह सुनिश्चित करने के लिए कि ऐसा न हो चौकस रहना आवश्यक है।

(2) *आशा में स्थिर रहें* (आयत 6)। ''आशा'' इब्रानियों की पुस्तक का मुख्य शब्द है (6:11, 18, 19; 7:19; 10:23)। हमें दिन प्रतिदिन बने रहने के लिए आशा की आवश्यकता है।

(3) *''अन्त तक'' दृढ़ता से विश्वासी रहें* (आयतें 6, 14)।

(4) *अपने मनों के कठोर होने की चौकसी करें* (आयतें 8, 13)। *पाप मन को कठोर* कर देता है जिसका परिणाम *अविश्वास* होता है और जो *विश्वासत्याग* का कारण बनता है।

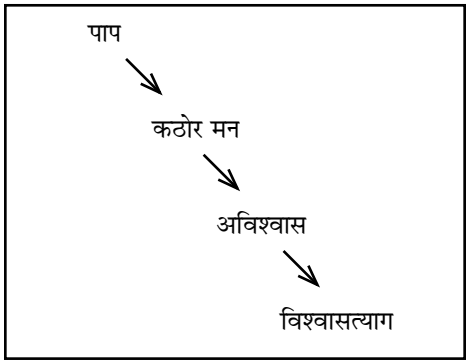

(5) *आत्मिक रूप में चौकस रहें* (''चौकस रहो'') (आयत 12)।

(6) *एक-दूसरे को विश्वासयोग्य रहने और सही काम करने के लिए प्रोत्साहित करें* (आयत 13)। यह इब्रानियों की पुस्तक में ''एक-दूसरे'' का एक है (देखें 10:24, 25)।

(7) *जान लें कि हमारे पास ''आज'' ही का समय है* (आयतें 7, 13)। आपको जो भी करना है, अभी कर लें। इसे टालें मत!

सिखाने वाले के लिए नोट्स

3:7 में हमें इब्रानियों की पुस्तक में शिक्षा के दूसरे भाग का आरम्भ मिलता है (इस पुस्तक में कहीं रूपरेखा देखें)। उस शिक्षा के भाग को हम ''अतीत से चेतावनी'' नामक पाठ में पूरा देखेंगे। इसके पहले भाग की संक्षिप्त समीक्षा इस सबक को व्यावहारिक बनाने के लिए इस पाठ में दी गई है। यह पाठ पढ़ाते समय याद रखें कि आप अध्याय 4 के आरम्भ के साथ फिर से 3:7-14 पर भी बात करेंगे।

टिप्पणियां

[1]पिछले पाठों की समीक्षा करें, विशेषकर यीशु के बारे में वचन की बात करके। [2]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स क्रम्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 123. [3]जैसा कि आम तौर पर होता है, ''भाई'' शब्द का इस्तेमाल नर और नारी दोनों मसीही लोगों को शामिल करने के लिए सामान्य अर्थ में किया जाता है। [4]जी. सी. ब्रिवर, *ब्रिवर'स सरमन: क्राइस्ट क्रूसिफाइड* (नेशविल्ले: बी. सी. गुडपेस्चर, 1952), 121. [5]यह पद्य विलियम बार्कले, *दि लैटर टू दि हिब्रूस,* 3रा संस्क., संशो. एवं अपडेटिड, द न्यू डेली स्टडी बाइबल (लुइसविल्ले: वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रैस, 2002), 35 से लिया गया था।